ऑनलाइन नहीं ऑफलाइन जुड़े थे बच्चे

– बीरेन्द्र सिंह बिष्ट

कोविड के संकट के बीच जब सबकी मनःस्थिति पूरी तरह अस्त–व्यस्त हो चुकी थी ऐसे में शिक्षण कार्य के बारे में सोचना एक बड़ी चुनौती थी लेकिन मैंने सुरक्षा के सभी उपायों को अपनाते हुए इस बारे में पहल करना और घर–घर जाकर बच्चों के अभिभावकों से मिलना शुरू किया। मैंने पाया कि बात करने से लोगों का डर कुछ कम होने लगा।

मेरा विद्यालय रुद्रप्रयाग जिले से लगभग 32 किलोमीटर दूर है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय बीरों, संकुल बसुकेदार, ब्लॉक अगस्त्यमुनि। मेरे विद्यालय में 29 बच्चे नामांकित हैं। बच्चों के साथ काम चल ही रहा था कि मार्च का महीना आया। परीक्षा की तैयारी चल रही थी। उसी समय कोविड़ महामारी का प्रकोप आ गया पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया गया। हम घरों में कैद हो गए और इस महामारी पर तरह–तरह की खबरें आने लगी। मानव जीवन पर एक बड़ी त्रासदी थी। तरह–तरह की घटनाएं सुनाई पड़ रहीं थी। सबसे बुरे हालत मजदूरों के थे जिनमें नेपाली परिवार प्रमुख थे। जो कई रात भूखे सोये थे जैसे–जैसे पता चल रहा था उनकी मदद हो रही थी। अगस्त्यमुनि में इन परिवारों के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का प्रयास सराहनीय था। इस महामारी का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ा। मेरा विद्यालय भी इस महामारी के कारण बंद हो गया। गांव के लोग घरों में कैद हो गए चारों तरफ सन्नाटा था। मुझे मेरे छात्रों की चिंता सता रही थी कि अब वे कैसे होंगें, उनकी पढ़ाई तो चौपट हो जाएगी। दूसरी तरफ इस महामारी का ऐसा डर था, शहर खाली हो रहे थे। शहरों से प्रवासी गांव वापस लौट रहे थे, गांव में डर का माहौल बन गया था। हर कोई प्रवासियों को हिकारत भरी नजरों से देख रहा था। मेरी ड्यूटी विद्यालय में प्रवासियों की देखभाल में थी विद्यालय में इनको क्वारंटाईन किया गया था। मेरा पूरा प्रयास था कि परिवार सहित लौटे साथियों को दिक्कत न हो। इसके साथ बीमारी भी गांव में ना फैले इसलिए पूरे इंतजाम किए गए थे। धीरे–धीरे यह वक्त भी गुजर गया। लेकिन लॉकडाउन तो बढ़ता ही जा रहा था मेरी चिंता अपने छात्रों को लेकर बढ़ती ही जा रही थी। कैसे उनके भविष्य पर आए इस संकट के प्रभाव को कम किया जा सके। शिक्षण कार्य शुरू करना एक बड़ी चुनौती थी। किन्तु मैंने अब फैसला किया कि कुछ पहल की जाए। मैं घर–घर जाकर अभिभावकों से मिला तरह–तरह की बातें हो रही थीं। लोगों में डर का माहौल था लोग घबरा रहे थे बच्चों को भेजेंगे तो कहीं इस बीमारी की चपेट में ना आ जाएं। मैंने भी इसका उपाय खोजा और कहा कि ऑनलाइन शिक्षण करेंगे लेकिन जब मैंने पता किया तो आधे से ज्यादा लोगों के पास तो एनरॉयड फोन ही नहीं था। अब ऑनलाइन पर काम होना मुश्किल था फिर मेरा प्रयास ऑफलाइन काम करने को लेकर शुरू हुआ। मेरा गांव विद्यालय से लगभग 2 किलोमीटर था। गांव के लोग सवाल न उठाएं इसलिए बीरों गाँव से ही एक बी.एस.सी. की छात्रा को पढ़ाने के लिए तैयार किया। यह सफर कुछ दिन तक तो चला लेकिन जल्द ही रुक गया। यह इसलिए रुका क्योंकि गांव में आ रहे प्रवासी और उनके बच्चों का भी इन केंद्रों पर आने से डर का माहौल बन गया। छात्रा ने भी पढ़ाने से इंकार कर दिया। अब मेरे सामने एक नई समस्या आ गई थी। क्योंकि मैं प्रत्येक सप्ताह इसकी प्लानिंग और क्या पढ़ाना है इस पर काम कर रहा था। अब मैंने सोचा छात्रों के लिए मुझे ही कुछ करना होगा। मैंने अगस्त के प्रथम सप्ताह में प्रधान जी से बात की और कहा कि मेरा विद्यालय सैनेटाईज करवा दीजिए मैं विद्यालय में पढ़ाऊंगा। प्रधान जी ने मुझे समझाया पर मेरे विश्वास पर तैयार हो गए गांव के लोगों ने पूरे विद्यालय को सैनेटाईज कर दिया। विद्यालय की साफ सफाई एवं रंगाई–पुताई भी हो गई। अब चिंता थी कि पढ़ाई की शुरुआत कैसे की जाए। मैंने सभी अभिभावकों से जाकर संपर्क किया और उनको तैयार

किया। विद्यालय में अभिभावकों की एक मीटिंग बुलाई गई जिसमें कोरोना को लेकर बातचीत हुई इसके साथ ही कैसे इससे बचा जा सकता है क्या सावधानियां रखी जा सकती हैं। अभिभावकों से लिखित रूप में बच्चों को पढ़ने भेजने एवं किसी भी घटना की जिम्मेदारी ली गई। इसके बाद मैंने शिक्षण कार्य शुरू कर दिया यह कार्य विभाग से बिना बताए किया जा रहा था। इसलिए शिक्षण कार्य का समय सुबह 7:00 से 10:00 बजे तक 3 घंटे का तय किया गया। क्योंकि शिकायत होने पर मुझे कार्रवाई का डर भी सता रहा था लेकिन बच्चों की भविष्य की चिंता मुझे खाए जा रही थी। मुझे लग रहा था जो पढ़ाई का काम उनके साथ हुआ है वह सब चौपट हो जाएगा। अब मैं प्रत्येक दिन की शिक्षण योजना बनाकर विद्यालय जाने लगा। शुरू में भाषा और गणित विषय को लेकर 3 घंटे काम किया। बच्चों के गृहकार्य को भी शिक्षण में स्थान दिया। लॉकडाउन में बच्चों के साथ शुरुआती भाषा एवं गणित सिखाने पर काम किया गया जिसमें टी.एल.एम. के माध्यम से अक्षर को पहचानना, उनको समझना एंव उसका उच्चारण करना शामिल था। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से यह काम करने की कोशिश भी की गई इस कार्य के दौरान आने वाली चुनौतियों को समझने की कोशिश भी की गई। यह कार्य एनसीईआरटी कक्षा की पाठयपुस्तक पर केन्द्रित रहा है– इसका प्रभाव यह पड़ा कि आज हमारे बच्चे नियमित तौर पर पठन–पाठन से जुड़े हुए हैं। उनके सीख स्तर को भी देख कर मुझे खुशी होती है। मेरे गांव के अभिभावक भी बहुत खुश है कि जहां पूरे देश में विद्यालय बंद है ऐसे समय में भी मेरे बच्चे पढ़ पा रहे हैं। मेरे प्रयास में गांव के कुछ युवा भी जुड़ गए हैं। वे बच्चों को गृहकार्य देने एवं पढ़ाने का कार्य करते हैं। माह नवंबर से नियमित मैंने 9:00 बजे से 1:00 बजे का समय निश्चित किया है। जिसमें मैं भाषा गणित अंग्रेजी विषय पर काम कर रहा हूं। मुझे खुद भी बहुत संतोष होता है जब मैं छात्रों के पठन–पाठन में उनकी प्रगति को देखता हूं। यह हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है और निश्चित तौर पर आने वाले समय में किया गया यह प्रयास हमें बहुत मदद करेगा।

लेखक प्रधानाध्यापक बीरों, संकुल बसुकेदार, ब्लॉक अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

सिर्फ़ एक दिन के लिए

– नाज़िम हिक़मत

सिर्फ़ एक दिन के लिए
यह दुनिया
चलो, बच्चों को दे दें
खेलने के लिए
आकर्षक, चमकते गुब्बारे की तरह
सितारों के बीच खेलें वे गाते हुए
चलो, यह दुनिया दे दें बच्चों को

रोटी के एक गर्म टुकड़े की तरह
एक बड़े विशाल सेब की तरह
सिर्फ़ एक दिन के लिए काफ़ी होगा
चलो, दे दें यह दुनिया बच्चों को

सिर्फ़ एक दिन के लिए
दुनिया सीख जाए दोस्ती करना
बच्चों को मिल जाए
हमारे हाथों यह दुनिया
और
वे लगा दें दुनिया में सनातन वृक्ष

अँग्रेज़ी से अनुवाद : अनिल जनविजय